नाथ साहित्य

डॉ. कृष्ण कुमार पासवान
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग
राम चरित्र सिंह महाविद्यालय
मंझौल, बेगुसराय
सम्पर्क : ksoni.hindi@gmail.com

नाथ संप्रदाय सिद्ध परंपरा का ही विकसित रूप है। गोरखनाथ इसके प्रवर्तक माने जाते हैं। उनके गुरु अन्तिम सिद्ध मत्स्येन्द्रनाथ थे जो अन्य सिद्धों की भक्ति भोग प्रधान साधना में लीन थे किंतु गोरखनाथ ने भोग प्रधान साधना के स्थान पर योग प्रधान हठयोग साधना पर बल दिया।

'नाथ' शब्द का अर्थ है - मुक्ति देने वाला। नाथों ने अपने साहित्य में सांसारिक भोगों से मुक्ति प्राप्त करने पर बल दिया।

इन्होंने शैव मत के सिद्धान्तों को स्वीकार करते हुए 'शिव' को आदिनाथ माना तथा संयम व सदाचार को महत्व दिया।

सिद्धों के प्रवृत्ति मार्ग से नाथों के निवृत्ति मार्ग को प्रकट करती हुई एक उक्ति प्रसिद्ध है-

'भाग मछिन्दर गोरख आया।'

नाथ योगियों की संख्या **9** बताई गई है जिनमें चर्पटीनाथ, जलन्धर नाथ आदि के नाम प्रमुख हैं। नाथों की विभिन्न रचनाओं में सबदि, पद, प्राणसंकली, आत्मबोध, पंचमात्रा, शिष्यादासन आदि का उल्लेख किया जा सकता है। नाथ साहित्य में संयम, सदाचार, ब्रह्मचर्य आदि पर बल देते हुए नारी से दूर रहने की प्रेरणा दी गई है। इस संदर्भ में गोरखनाथ की उक्ति उल्लेखनीय है।

'नौ लखि पातरि आगे नाचें, पीछें सहज अखाड़ा।
ऐसा मन ले जोगी खेलै, तब अंतरि बसै भंडारा।।'

नाथ साहित्य में हठयोग साधना द्वारा कुण्डलिनी को जागृत करके अनहदनाद की स्थिति तक पहुँचकर मोक्ष प्राप्ति को संभव बताया गया है। हठयोग साधन में 'ह' सूर्य का तथा 'ठ' चंद्र का प्रतीक है। वे अपनी साधना से सूर्य व चंद्र का मिलाप करवाना चाहते थे अर्थात् इन्द्रियों की सामान्य प्रवृत्तियों को अपनी साधनामूलक क्रियाओं से बदल देना चाहते थे। अपनी हठयोग की अन्तर्मुखी साधना हेतु इन्होंने गुरु को विशेष महत्व दिया।

अपनी रचनाओं में इन्होंने सामाजिक असमानताओं का तीव्र खण्ड़न किया तथा कर्मखण्डों का विरोध किया। इन्होंने काव्य की रचना अपने मत के सिद्धान्तों के प्रचार के लिए की। इनकी भाषा अपभ्रंश से प्रभावित पुरानी हिन्दी है। इनकी हठयोग से प्रभावित साधना की अभिव्यक्ति प्रतीकात्मक शब्दों में हुई है। इनके द्वारा प्रयुक्त सूर्य, चन्द्र, कमल, गगन आदि अनेक शब्द प्रतीकात्मक है।

इन्होंने हिन्दी साहित्य में पहली बार निवृत्ति मार्ग व हठयोग की साधना से प्रभावित काव्य की रचना की जो भक्तिकाव्य के लिए समृद्ध पृष्ठभूमि बनी।

(समाप्त)